Eu – बीज के अपने आप उगने का दृष्टांत मरकुस ४:२६-२९ | 1

– Save This Page as a PDF–

बीज के अपने आप उगने का दृष्टांत

मरकुस ४:२६-२९

खोदाई: यह दृष्टांत Et– मिट्टी के दृष्टांत का पूरक कैसे है? यह दृष्टांत किसकी ओर निर्देशित था? प्रभु उनके मन को शांत करने का प्रयास क्यों कर रहे थे? एक महत्वहीन बीज का रोपण जिसके परिणामस्वरूप शानदार गेहूं का डंठल होता है, सुसमाचार के बीज के रोपण के समान कैसे होता है जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर का राज्य होता है?

चिंतन: क्या फसल हम पर निर्भर है? जहां तक ईश्वर के राज्य का संबंध है, ईश्वर का क्या हिस्सा है? हमारा हिस्सा क्या है? वह हमें कुछ बीज बिखेरने की अनुमति क्यों देता है? आप उसे कैसे करते हैं? जब आपको एहसास होता है कि आप परमेश्वर के राज्य में मसीह के सह-वारिस हैं और एक दिन उसके साथ राज्य करेंगे तो आपको कैसा महसूस होता है? यह इस बारे में क्या कहता है कि परमेश्वर आपके बारे में क्या सोचते हैं? यह आज आपके जीवन में कैसे बदलाव ला सकता है?

बीज के अपने आप बढ़ने के दृष्टांत का एक मुख्य बिंदु यह है
कि सुसमाचार के बीज में एक आंतरिक ऊर्जा होगी ताकि वह अपने आप ही जीवन में आ जाए।

पहला दोहा बीज के अपने आप उगने (सच्चे) और गेहूं और जंगली घास (झूठे) के दृष्टांतों से युक्त है, जो दर्शाता है कि एक सच्चे रोपण की नकल एक झूठे प्रति-रोपण द्वारा की जाएगी। यह दृष्टांत हमें सिखाता है कि पुनर्जनन का रहस्य किसान पर निर्भर नहीं है। यह दृष्टांत एक उपमा है क्योंकि यह रोजमर्रा की जिंदगी से एक उदाहरण लेता है और यीशु अपनी बात कहने के लिए इसका उपयोग करते हैं। यह उनमें जो सामान्य है उसके आधार पर ज्ञान हस्तांतरित करता है। क्योंकि प्रेरितों को पृथ्वी के छोर तक राज्य के संदेश का प्रचार करने के लिए नियुक्त किया जाएगा (मत्ती २८:१९-२०), उनके लिए यह महसूस करना आसान होगा कि फसल उनके प्रयासों पर निर्भर करती है। जीवन का प्रभु यह स्पष्ट करना चाहता था कि उत्पादित कोई भी फसल बीज बोने और फिर फसल के समय बीज में जीवन को विकास और फल के माध्यम से प्रकट होने की अनुमति देने का परिणाम होगी।

उन्होंने यह भी कहा: ईश्वर का राज्य ऐसा ही है। एक बार फिर आने वाले राज्य की तुलना फसल से की गई है। एक किसान ज़मीन पर बीज बिखेरता है (मरकुस ४:२६)। बिखराव के बाद किसान की निष्क्रियता का सजीव चित्रण किया गया है। उनका जीवन बहुत

Eu – बीज के अपने आप उगने का दृष्टांत मरकुस ४:२६-२९ | 2

व्यवस्थित है. वह दिन-रात सोता है और काम करता है। लेकिन उसके बिना कोई चिंताजनक विचार या कोई सक्रिय कदम उठाए, बीज उगने से लेकर फूटने तक, फूटने से लेकर फूल आने तक, और फूल लगने से पकने तक बढ़ता है – विकास की एक निरंतर प्रक्रिया। रात और दिन, चाहे वह सोए या उठे, बीज अंकुरित होता है और बढ़ता है, हालाँकि वह नहीं जानता कि कैसे (मरकुस ४:२७)। जो बीज पहले दृष्टांत के अनुसार बोया गया था वह बेवजह पुनर्जीवित हो जाएगा और जीवन में आ जाएगा और आस्तिक में शाश्वत जीवन पैदा करेगा। इसमें एक आंतरिक शक्ति, एक आंतरिक ऊर्जा है, जिससे यह अपने आप ही जीवन में आ जाता है। यही पुनर्जनन का रहस्य है।

जीवन और विकास की शक्तियां हमारे ज्ञान से लगातार दूर होती जा रही हैं। आज भी हम बीज से पौधा बनने और फिर फल पैदा होने के बारे में ज्यादा नहीं जानते? एक ऐसे बीज में जीवन की व्याख्या कौन कर सकता है जो बढ़ता और बढ़ता है? मिस्र के मकबरे में पाए गए बीजों में जीवन का सार चार हजार वर्षों तक कैसे निष्क्रिय रहा और रोपे जाने पर भी जीवित हो उठा? जीवन का रहस्य सदियों का प्रश्न है।

उसी समय, एक साधारण सुसमाचार के बीज के लिए यह कैसे संभव है, कि यीशु हमारे पापों के लिए मर गया, कि उसे दफनाया गया और तीसरे दिन फिर से जीवित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप पुनर्जन्म हुआ? दो हज़ार साल पहले जो कुछ हुआ वह किसी व्यक्ति को अंधकार के साम्राज्य से प्रकाश के साम्राज्य में कैसे ले जा सकता है?

यही रहस्य है.

किसान बस इतना कर सकता है कि बीज को तैयार मिट्टी में
बिखेर दे। जीवन का वसंत आना उस पर निर्भर नहीं है। मिट्टी अपने आप अनाज पैदा करती है – पहले डंठल, फिर बाल, फिर सिर में पूरी गिरी (मरकुस ४:२८)। जब हम लोगों को अपने रूपांतरण के अनुभव साझा करते हुए सुनते हैं, तो हम सोच सकते हैं कि उनका विश्वास एक ही बार में घटित हुआ। लेकिन उनका उद्धार अक्सर यह निर्णय लेने से पहले आध्यात्मिक तीर्थयात्रा की एक विस्तारित पृष्ठभूमि से जुड़ा होता है। उन्हें खुशखबरी पर विचार करने के लिए समय चाहिए था। उनके लिए, उद्धारकर्ता के

Eu – बीज के अपने आप उगने का दृष्टांत मरकुस ४:२६-२९ | 3

पास आना एक प्रक्रिया थी। यह खेती की प्रक्रिया के समान है: महीनों का इंतजार खत्म होता है और मजदूर फसल में मदद करने के लिए खेतों में आते हैं। हमारे विश्वास को, एक फसल की तरह, बढ़ने के लिए समय की आवश्यकता होती है।

किसान तो केवल बीज बो रहा था। जीवन का उद्भव बीज का परिणाम था। अत: पृथ्वी स्वतः ही फल उत्पन्न करती है। लेकिन विकास का रहस्य तो बीज में ही है। ठीक इसी प्रकार, हम परमेश्वर के वचन का बीज बोते हैं; मिट्टी, अर्थात् आत्मा, इसे प्राप्त करती है, परमेश्वर पवित्र आत्मा पापी के हृदय पर कार्य करता है, बोए गए बीज का उपयोग करता है और उसे अंकुरित और विकसित करता है। यह प्रकृति के अनुसार चीजों का तरीका है, और अनुग्रह की व्यवस्था के अनुसार चीजों का तरीका भी है (इब्रानियों Bp पर मेरी टिप्पणी देखें – अनुग्रह की व्यवस्था)।

जैसे फसल आने के कारण बीज बोने के समय का पालन उचित समय पर किया जाता है, वैसे ही राज्य के वर्तमान रहस्य के बाद मसीहा साम्राज्य की महिमा होगी। जैसे ही अनाज पक जाता है, वह उस पर हँसिया चलाता है, क्योंकि फसल आ गई है (मरकुस ४:२९)। आरंभ और अंत की प्रतीत होने वाली महत्वहीनता के बीच कितना बड़ा अंतर है! जैसे गेहूं का डंठल बीज का परिणाम है, अंत शुरुआत में निहित है। असीम रूप से महान् असीम रूप से लघु में सक्रिय है। वर्तमान में, और वास्तव में गुप्त रूप से, परिणाम पहले से ही निर्धारित है। जिन लोगों को यह समझने के लिए दिया गया है, उन्हें ईश्वर के राज्य का रहस्य पहले से ही इसकी छिपी हुई और प्रतीत होने वाली महत्वहीन शुरुआत में दिखाई देता है।

यह अटूट आश्वासन कि ईश्वर का समय निकट आ रहा है, येशुआ के उपदेश में एक महत्वपूर्ण तत्व है। ईश्वर का समय आ रहा है – नहीं, और भी अधिक – यह पहले ही शुरू हो चुका है। मसीहा की शुरुआत में अंत पहले से ही निहित है। उसने अपना मुख चकमक पत्थर के समान कर लिया (यशायाह ५०:७; लूका ९:५१) और कोई भी वस्तु उसे रोक न सकी। उनके मिशन के संबंध में कोई संदेह, कोई तिरस्कार, कोई विश्वास की कमी, कोई अधीरता, पापियों के उद्धारकर्ता को डिगा नहीं सकती। हम विश्वास कर सकते हैं कि जैसे उसने शून्य से कुछ बनाया (उत्पत्ति १:१), राजाओं का राजा अपनी शुरुआत को पूरा कर रहा है। हमारे लिए सभी बाहरी दिखावे के बावजूद उस पर विश्वास करना आवश्यक है। सबसे ऊपर, आपको यह समझना चाहिए कि अंतिम दिनों में उपहास करने वाले आएंगे, उपहास करेंगे और अपनी बुरी इच्छाओं का पालन करेंगे। वे कहेंगे, “उसने जिसका वादा किया था वह कहाँ आ रहा है?” लेकिन ये एक बात मत भूलना. . . प्रभु का दिन रात के चोर के समान आयेगा (दूसरा पतरस ३:३-४अ, ८अ, १०अ)।

जहां तक मसीहा साम्राज्य के आने का सवाल है, ईश्वर का अपना हिस्सा है और हमारा अपना हिस्सा है। जैसा कि यह दृष्टांत स्पष्ट करता है, सुसमाचार के बीज में एक आंतरिक ऊर्जा होगी जिससे वह अपने आप जीवन में आ जाएगा। वह परमेश्वर का हिस्सा है. वह सर्वशक्तिमान है और समय से परे खड़ा है। वह शून्य से भी कुछ बना सकता है

Eu – बीज के अपने आप उगने का दृष्टांत मरकुस ४:२६-२९ | 4

(उत्पत्ति १:१)। लेकिन, ईश्वर ने चुना कि हम इस महान कार्य में उसकी सहायता करें। अन्यथा, उसने पिता के पास लौटने के बाद और अधिक बीज बिखेरने के लिए टैल्मिडिम को प्रशिक्षित नहीं किया होता (देखें Et – मिट्टी का दृष्टांत)। इसलिए नहीं कि उसे हमारी सहायता की आवश्यकता है या वह अपने उद्देश्यों को स्वयं पूरा नहीं कर सकता, बल्कि इसलिए कि वह चाहता है कि हम मसीह के साथ उस राज्य में सह-वारिस के रूप में भाग लें (रोमियों ८:१७) और उसके साथ शासन करें (दूसरा तीमुथियुस २:१२)। हमें केवल उन आध्यात्मिक उपहारों के प्रति वफादार रहने की आवश्यकता है जो उसने हमें दिए हैं। जब फसल आती है तो यह ईश्वर पर निर्भर करता है, हम पर नहीं। आंतरिक ऊर्जा सुसमाचार के बीज में है, हम में नहीं। लेकिन अपने पिता के साथ मैदान में छोटे बच्चों की तरह, वह हमसे केवल जीवन का बीज बिखेरने में मदद करने के लिए कहता है। वह हमारा हिस्सा है.

हम नौ दृष्टांतों को देखने जा रहे हैं जो विचार के बुनियादी प्रवाह को विकसित करते हैं: (१) मिट्टी का दृष्टांत (Et) सिखाता है कि पूरे चर्च युग में सुसमाचार का बीजारोपण होगा। (२) बीज के अपने आप उगने का दृष्टांत (Eu) सिखाता है कि सुसमाचार के बीज में एक आंतरिक ऊर्जा होगी जिससे वह अपने आप जीवन में आ जाएगा।